: प्रथम अध्याय :

रांगेय राघव:व्यक्तित्व एवं कृतित्व

: प्रथम अध्याय :

'रांगेय राघव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

1.1 जीवन परिचय :-

1.1.1 जन्म ।

1.1.2 नाम तथा बाल्यकाल ।

1.1.3 माता-पिता और उनके संस्कार ।

1.1.4 शिक्षा ।

1.1.5 पारिवारिक जीवन तथा विवाह ।

1.1.6 अभिरुचि ।

1.1.7 प्रेरणा ।

1.1.8 पुरस्कार ।

1.1.9 मृत्यु ।

1.2 व्यक्तित्व :-

1.2.1 शरीर गठन ।

1.2.2 वेशभूषा ।

1.2.3 स्वभाव ।

1.2.4 प्रकृतिप्रेमी ।

1.2.5 शौक ।

1.2.6 कवि एवं पथदर्शक ।

1.2.7 जीवन के प्रति अनुराग ।

1.2.8 लेखन कार्य तथा साहित्य के प्रति रुचि ।

1.2.9 बुजुर्गों के प्रति आदर तथा अभिमान ।

1.2.10 कर्तव्य के प्रति जागृत तथा कर्तव्यनिष्ठ ।

1.2.11 क्रांतिकारी तथा देशप्रेमी ।

1.2.12 हिंदी के प्रति विशेष अनुराग ।

1.2.13 नारी के प्रति आदर ।

1.3 कृतित्व :-

1.3.1 काव्य ।

1.3.2 कहानी संग्रह ।

1.3.3 नाटक ।

1.3.4 उपन्यास ।

1.3.5 एकांकी ।

1.3.6 रिपोर्ताज ।

1.3.7 आलोचना, इतिहास-संस्कृति, चिंतन ।

1.3.8 अनुवाद ।

1.3.9 समाजशास्त्र लेखन ।

1.3.10 चलचित्र ।

निष्कर्ष

1.1 जीवन परिचय :-

प्रेमचंदोत्तर कालीन लेखन परंपरा के समर्थ उपन्यासकारों में डॉ.रांगेय राघव जी का नाम महत्त्वपूर्ण माना जाता है, जिन्होंने उनतालीस वर्ष की आयु में अहिंदी भाषी होकर भी हिंदी साहित्य को अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाओं से समृद्ध किया है। डॉ.रांगेय राघव जी ने साहित्य के हर क्षेत्र में चरण रखकर अपनी लेखनी के माध्यम से विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। इसीलिए उन्हें बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार कहा जाता है। राघव जी के साहित्यादर्श उनके सामाजिक जीवन के सूक्ष्म-निरीक्षण और गहन अध्ययन-मनन का ही प्रतिफल है । उन्होंने मनुष्य के जीवनगत यथार्थ और सत्यता की खोज कर अपने साहित्यिक विषयों की रचना की है।राघव जी प्रगतिवादी साहित्यकार थे। उनके साहित्यिक विषय अधिकतर वर्ग-संघर्ष, मनुष्य की पीड़ा, सामाजिक विषमता और उसका विरोध आदि रहे हैं । उन्हें श्रमिक तथा शोषितों के प्रति सहानुभूति और शोषक वर्ग के प्रति घृणा थी । इसी कारण वे मार्क्सवाद के समर्थक माने जाते थे।

1.1.1 जन्म :-

राघव जी का जन्म 17 जनवरी, 1923 में आगरा के बाग मुजफ्फर खां मोहल्ले (आज-कल डॉ.रांगेय राघव मार्ग कहलाता है) में बागेश्वर नाथ जी के मंदिर से बिलकुल सटा हुआ, पीपल की छाया से अच्छादित मकान में शिशिर ऋतु के सूर्योदय की बेला में ताताचार्य कुल के श्री.टी.एन.रंगाचार्य परिवार में हुआ। राघव जी का जन्म होते ही रुस्तम खां नामक फकीर ने भविष्यवाणी की थी कि 'देखो सितारा चमका, लेकिन ज्यादा नहीं रहेगा'। फकीर की बात सुनकर रंगाचार्य जी चिंता लिए भृगुसंहिता वालों से मिलने गए और तब जाकर निश्चिंत हुए जब उन्होंने बालक की

आयु 75 वर्ष लिखकर दी। किंतु राघव जी के संबंध में यह भविष्यवाणी असत्य निकली, कारण सिर्फ 39 वर्ष की आयु में ही वे चल बसे।

1.1.2 <u>नाम तथा बाल्यकाल</u> :-

राघव जी की जन्म कुंडली का नाम 'राममूर्ति' था और परिवार वालों ने 'वीर राघव' नाम रखा था। सबसे छोटे होने के कारण प्यार से उन्हें 'पप्पू' या 'पापू' नाम से बुलाते थे, यहीं नाम मित्र-मंडली में प्रचलित हुआ। 'वैर' गांव के कृषक राघव जी को 'महाराज' नाम से बुलाते थे तो गांव के कुछ लोग 'भैयाजी' कहते थे और कुछ लोगों में 'आचार्य' नाम से संबोधित किए जाते थे। साहित्यिक जीवन में पदार्पण के पश्चात् इन्होंने अपना नाम 'रांगेय राघव' रखा। यह साहित्यिक नाम रहस्यमय है जैसे - 'रांगेय' अर्थात् रंगाचार्य का पुत्र और राघव आचार्य का संक्षेप में 'राघव' किया तो 'रांगेय' और 'राघव' से बना हुआ नाम है - 'रांगेय राघव'।

राघव जी का बाल्यकाल वैर में ही बीता। दोनों बड़े भाइयों तथा परिवार वालों के बीच सबसे छोटे होने के कारण काफी लाड़-प्यार से पले। माता की शरीर अस्वस्थता के कारण तीनों भाइयों का लालन-पालन उनकी मौसी 'अतंगा' ने ही किया। अपने बाल्यकाल की छोटी-मोटी बातें याद कर वे बड़े मजे से सुनाते थे, जैसे - बचपन में उन्हें चने के लड्डू बहुत पसंद थे। भाइयों की शरारतें, माँ से की गई उनकी शिकायतें, माँ-बहन के कुछ किस्से आदि छोटी-छोटी बाते सुलोचना जी से करते समय उन्हें हँसी आती थी कि कैसे ऐसी बातों को लेकर उनका मन दुखी हो जाता था।

1.1.3 माता-पिता और उनके संस्कार :-

(अ) माता :-

राघव जी की माता का नाम कनकम्मा (कनकवल्ली) था। उनके संबंध में सुलोचना जी का कथन है, "माता कनकम्मा विदुषी थी – तमिल, कन्नड़ और ब्रजभाषा की ज्ञात्री। जीवन को गहराई से जाना था उन्होंने।"[1] श्रीमती कनकम्मा रंगाचार्य जी की दूसरी पत्नी थी। विवाह के समय कनकम्मा और रंगाचार्य के बीच तीस वर्ष का अंतर था। ईश्वर के प्रति उनकी गहरी निष्ठा थी। राघव जी की माता सीधी-सरल, उदार तथा दयालु स्वभाव की थी। अपनी माँ की गहरी छाप राघव जी पर पड़ी थी।

राघव जी की माता बच्चों की पढ़ाई पर पूरा ध्यान देती थी। बच्चों की हर बात में रुचि लेती थी। राघव जी की दुनिया बचपन से अंत तक अपनी माँ के इर्द-गिर्द ही बनी रही। राघव जी की माता को पढ़ने का बड़ा शौक था, इसीलिए राघव जी अपनी माँ के लिए विविध प्रकार की पुस्तकें महाविद्यालय के पुस्तकालय से ले आते थे। पुस्तक पढ़ने के बाद उस पुस्तक पर दोनों चर्चा भी करते थे। परंतु राघव जी की माँ राघव जी को ज्यादा दिन तक साथ न दे सकी। कैंसर की बीमारी के कारण उनका जनवरी, 1959 में देहांत हुआ।

(ब) पिता :-

राघव जी के पिता का नाम श्री.टी.एन.रंगाचार्य था। वे 'वैर' गांव के जागीरदार तथा सीता-राम मंदिर के पुजारी थे। वे अध्यात्मिक एवं संस्कृत के विद्वान थे । अतः उन्हें मंदिर के उतराधिकारी के पद पर चुन लिया गया। रंगाचार्य जी

संस्कृत और फारसी भाषा के ज्ञाता तथा प्रकांड् पंडित थे ।एक श्लोक का अर्थ तीन दिन तक भिन्न-भिन्न रुपों में समझाते थे । उनका अधिकांश समय धार्मिक चर्चाओं में ही व्यतीत होता था। वे काव्यशास्त्र के भी अच्छे ज्ञाता थे। राघव जी को कवित्व की प्रेरणा संस्कार रुप में पिता से ही प्राप्त हुई। रंगाचार्य के निर्भिक व्यक्तित्व का भी प्रभाव उन पर पड़ा था ।

श्री.रंगाचार्य जी का स्वभाव बहुत ही सरल एवं उदार था। वे मितभाषी थे। उनकी निर्भिकता के कई उदाहरण हैं - जैसे किसी काम के सिलसिले में वे घोड़े पर सवार होकर आगरा जा रहे थे। रास्ते में नदी को बाढ़ आई थी तब वे घोड़े को वहीं छोड़कर नदी पार कर गए थे । रंगाचार्य जी गांववालों के सुख-दुख में बराबर के भागीदार बने रहते थे। उनको मंदिर तथा जागीर की निगरानी के अतिरिक्त देश की भी चिंता लगी रहती थी। वे स्वाधीनता के पक्षधर थे और साईमन कमिशन के विरोध में उन्होंने आवाज भी उठाई थी। वे ब्रिटिश सरकार के विरोधी थे। बारह वर्ष तक 'कोर्ट ऑफ वॉर्डस्' कानून के अंतर्गत उनकी संपत्ति के अधिकार छीन लिए गए थे। इन सबके बावजूद भी वे अपने परिवार की हर प्रकार से निगरानी रखते थे।

रंगाचार्य जी संस्कृत एवं फारसी में कविता करते थे। वे संस्कृत के विद्वान थे ही, साथ ही तमिल ग्रंथों का भी उन्होंने गहन अध्ययन किया था। वे एक ओर विद्वत्ता प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम करते थे तो दूसरी ओर उनका विश्वास भूत-प्रेत तथा मंत्र-तंत्र पर भी था। इन बातों को लेकर वे अनेक प्रकार के प्रयोग भी करते थे। राघव जी को अपने पिता के प्रति बहुत ही आदर एवं गर्व था। पिता के साहसिक तथा रहस्यमय जीवन के बारे में सुनाते समय उन्हें आनंद तथा गर्व

महसूस होता था। सन 1944 ई.में राघव जी के पिता का देहांत हुआ, तब राघव जी अपने पीएच्.डी. के शोध कार्य में व्यस्त थे, जिसके पूर्ण होने की प्रतिक्षा रंगाचार्य जी उत्सुकता पूर्वक कर रहे थे।

1.1.4 शिक्षा :-

राघव जी का जन्म 'आगरा' में हुआ था, किंतु छः वर्ष की आयु तक 'वैर' में ही घर पर उनका प्रारंभिक विद्याभ्यास हुआ। तत्पश्चात् स्वातंत्र्य संग्राम में हिस्सा लेने के कारण ब्रिटिश सरकार ने उनके पिता को राजस्थान की सरहद के बाहर रहने का आदेश दिया और रंगाचार्य जी अपने परिवार के साथ आगरा में जा बसे। आगरा में विक्टोरिया स्कूल तथा सेंट जॉन्स महाविद्यालय में राघव जी का विद्योपार्जन हुआ। संस्कृत का अभ्यास पंड़ित बालेश्वर प्रसाद ने करवाया था। सेंट जॉन्स कालेज में क्रमशः सन 1936 ई. में माध्यमिक और सन 1941 ई. में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। बी.ए. में अंग्रेजी साहित्य के साथ दर्शनशास्त्र और अर्थशास्त्र विषय थे, किंतु बी.ए.की अंतिम परीक्षा में वे असफल हुए। इस असफलता का कारण बाद में मालूम हुआ जब 'घरौंदा' उपन्यास लिखकर तैयार हो गया।

राघव जी ने सेंट जॉन्स महाविद्यालय से हिंदी में एम्.ए.किया और प्रो. हरिहरनाथ टंडन के निर्देशन में 'गुरु गोरखनाथ और उनका युग' विषय पर शोध-कार्य किया। शोध-कार्य के संबंध में उन्हें शांति-निकेतन जाना पड़ा था। इसके लिए उन्होंने नाथ-पंथियों के विभिन्न मठों में घूमकर सामग्री इकट्ठा की थी। राघव जी अपने शोध-कार्य का परिणाम पिता को सुनाने के लिए उत्सुक हो रहे थे, और उसे सुने बिना ही पिता चल बसे।

1.1.5 <u>पारिवारिक जीवन तथा विवाह</u> :-

रंगाचार्य-परिवार में तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ थी, लेकिन दोनों पुत्रियों की असमय ही मृत्यु हुई। रंगाचार्य कुल के जेष्ठ पुत्र 'लक्ष्मीनरसिंह', द्वितीय-'कृष्णमूर्ति' और तृतीय - 'वीरराघव' (रांगेय राघव)।इनके परिवार के इन तीन भाइयों के संबंध में कहा जाता था कि, 'अय्यंगार परिवार के यह तीनों लड़के रवि वर्मा के चित्रों की भांति सुदर्शन हैं।' राघव जी सबसे छोटे होने के कारण इन्हें भाइयों से विशेष प्रेम मिला। राघव जी की मौसी 'अतंगा', बुआ -'अत्ते' फूफाजी 'देशिकाचार्य' इन से भी उन्हें विशेष स्नेह मिला। बुआ और फूफा दोनों भी विद्वान थे। साहित्यिक परिवार के वातावरण में राघव जी का जीवन बीता।

राघव जी 33 वर्ष तक अविवाहित ही थे। वे विवाह नहीं करना चाहते थे। उन्होंने अपना जीवन साहित्य-लेखन कार्य के लिए अर्पित करने का संकल्प किया था। परंतु माँ की इच्छा और अपनी शारीरिक अस्वस्थता के कारण वे विवाह के लिए राजी हो गए। उनकी इच्छा थी कि, पत्नी हिंदी भाषी और स्वजातीय हो । सुलोचना जी को पाकर राघव जी की अभिलाषा पूर्ण हुई। सुलोचना जी की बड़ी बहन 'शकुंतला' राघव जी की बड़ी भाभी थी। सुलोचना जी अपनी बहन के ससुराल गई थी तो बातचीत के पश्चात् उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर राघव जी ने विवाह का प्रस्ताव रखा। सुलोचना जी ने स्वीकृति दे दी। इसी तरह एक वर्ष पत्रव्यवहार में, एक-दूसरे को समझने, रुचियाँ जानने में और अन्य विचारों को अवगत कराने में गया।

7 मई, 1956 को माटुंगा (मुंबई) में सीधे-साधे और परंपरागत ढ़ंग से उनका विवाह संपन्न हुआ। विवाह के समय सुलोचना जी की आयु 19 वर्ष और

राघव जी की आयु 33 वर्ष की थी। दोनों के बीच लगभग चौदह वर्ष का अंतर था। राघव जी ऐसी जीवनसंगिनी चाहते थे जो उनके लेखन कार्य में प्रेरणा और प्रोत्साहन देती रहे। राघव जी ने विवाह के बाद सुलोचना जी का एम्.ए.तक अध्ययन पूरा किया। 8 फरवरी,1960 को राघव जी की पुत्री का जन्म हुआ। सुलोचना जी ने उसका नाम 'कल्पना' रखा था परंतु इस नाम से असंतुष्ट होकर राघव जी ने उसका नाम 'सीमन्तिनी' रखा।

अपने जीवन में वे शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति निराश ही रहते थे। सन 1948 ई. में श्रमसाध्य अतिलेखन और अनिद्रा के कारण राघव जी का स्वास्थ्य दिनोंदिन गिरता चला गया। सन 1962 ई. में उन्हें कैंसर जैसा असाध्य रोग हो गया। तरह-तरह के उपचार, इंजेक्शन, दवाइयों के बावजूद भी वे स्वस्थ नहीं हुए। फिर भी अंत तक उत्साह से वे अपना लेखन-कार्य करते रहे। जीवन के साथ संघर्ष करते-करते कभी सुख तो कभी दुख के साथ उन्होंने अपना दाम्पत्य-जीवन बिताया।

1.1.6 अभिरुचि :-

लेखन कार्य के साथ-साथ उन्हें चित्रकारी में भी रुचि थी। उन्हें नानाजी की ओर से चित्रकारी विरासत में मिली थी। उनके बड़े भाई भी चित्रकार थे। राघव जी के चित्र अधिकतर प्रकृति और मानव-जीवन पर आधारित थे। हर चित्र को बनाने के बाद वे उसका अर्थ बताते थे। बीमारी के दिनों में भी चित्र बनाते थे। सन 1948ई. में बीमारी के दिनों में 'मेघदूत' के संपूर्ण श्लोकों का भाव-चित्र बना दिया था। ऐसी ही अवस्था में उन्होंने पंडितराज जगन्नाथ के 'भामिनी विलास' का सचित्र पद्यानुवाद किया था, लेकिन यह अनुवाद अप्रकाशित रहा।

डॉ.रांगेय राघव प्रारंभ से ही प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारों के रहे। इसी कारण ब्रिटिश शासन के विरोध में जन-जागृति करने तथा देशभक्ति की भावना उभारने के लिए उन्होंने 'पैम्फ्लेटस्' तैयार कर बँटवाये थे। सार्वजनिक कार्य में उन्हें रुचि थी। अतः वे अकाल पीड़ित लोग और दीन-दलितों की मदद करते थे।

जब पढ़ने-लिखने से मन ऊब जाता तब वे डायरी में महीन अक्षरों में 'क्या लिखना है' की सूची तैयार करते।

संगीत के प्रति उनकी विशेष रुचि थी। और शास्त्रीय संगीत सुनने का शौक भी था। वे अपनी लिखी हुई कविताओं को तन्मय होकर गाया करते थे। कभी-कभी तानपुरा लेकर वे अपना प्रिय राग 'मालकौंस' तो कभी 'अल्हैया बिलावल', तो कभी 'भैरवी' गाया करते थे। उन्हें प्राचीन शिलालेख खोजने में रुचि थी । जब वे घूमने जाते थे तब तरह-तरह के पत्थर, ठीकरी उठा लाते और खोजने की कोशिश करते कि वह कितनी प्राचीन है। उन्होंने 'वैर' में खुदाई कर प्राचीन मुर्तियाँ ढूँढ निकाली थी।

इतिहास चिंतन में भी उन्हें रुचि थी। हर चीज का गहरा अध्ययन कर सूक्ष्म निरीक्षण के साथ उसका यथार्थ चित्रण वे करते थे। शांति निकेतन के अध्ययनशील तथा कलात्मक वातावरण से प्रेरित होकर ही उन्होंने 'मुर्दो का टीला' उपन्यास में आर्यों का आगम और द्रविड़ संघर्ष का विवेचन किया है। 'महायात्रा' में उन्होंने भारत के इतिहास को एक नविन दृष्टि से देखने का प्रयास किया है।

1.1.7 <u>प्रेरणा</u> :-

राघव जी का पारिवारिक वातावरण साहित्यिक था। माता-पिता के

अतिरिक्त उन्होंने अपनी बुआ और फूफा से साहित्यिक प्रेरणा प्राप्त की थी। राघव जी को उनके दोस्त, साथियों से प्रेरणा मिलती थी। दोस्तों के साथ वे हर विषय की चर्चा करते थे। सुलोचना जी से भी वह विविध विषयों पर चर्चा करते। सुलोचना जी से उन्हें अधिक प्रेरणा मिलती थी। अपने नौकर 'सरमन' से ग्राम्य-कथाएँ सुनते थे, गांव के लोगों से किस्से, कहानियाँ सुनते और वही उनके साहित्यिक-विषय बन जाते। इन सभी लोगों से प्रेरित होकर वे अपनी साहित्य की निर्मिती करते थे।

इन सबके अलावा उन्हें ग्रामीण तथा महानगरीय वातावरण एवं जीवन, प्रकृति, धार्मिक अंधविश्वास, इतिहास, चित्रकला आदि से साहित्य रचना के लिए प्रेरणा मिलती गई।

1.1.8 पुरस्कार :-

डॉ.रांगेय राघव जी ने अपनी कृतियों के माध्यम से पाठकों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। उन्होंने मानव-जीवन के सत्य तथा यथार्थ को खोज कर कृतियाँ लिखी हैं। उन्हें साहित्य-लेखन के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जैसे -

(1) सन 1947 ई. में प्रबंध काव्य 'मेधावी' के लिए "हिंदुस्थान अकादमी" द्वारा सम्मानित किया गया था।

(2) सन 1953 ई.में प्रकाशित हुई बहुचर्चित शोधपरक एवं व्याख्यात्मक पुस्तक 'भारतीय परंपरा और इतिहास' के लिए उन्हें सन 1954 ई. में "डालमिया पुरस्कार" से सम्मानित किया गया।

(3) उनके 'पक्षी और आकाश' उपन्यास को सन 1957 ई. में "भारतीय ज्ञानपीठ"

पुरस्कार प्रदान कर गौरवान्वित किया गया।

(4) 'कब तक पुकारूँ' उपन्यास को सन 1959 ई. में "उत्तर प्रदेश सरकार" द्वारा पुरस्कृत किया गया ।

(5) सन 1961 ई. का "राजस्थान साहित्य अकादमी" पुरस्कार 'मेरी प्रिय कहानियाँ' कहानी संग्रह को घोषित किया गया ।

(6) मरणोपरांत सन 1966 ई. में "महात्मा गांधी" पुरस्कार से राघव जी को सम्मानित किया गया।

राघव जी की ऐसी अनेक कृतियाँ हैं, जिनका उचित मूल्यांकन होना शेष है। पुरस्कृत 'कब तक पुकारूँ' उपन्यास पर दूरदर्शन धारावाहिक भी बन चुका है। साहित्य से दूर का संबंध रखनेवाले तथा अनपढ़ लोग भी इस धारावाहिक के कारण राघव जी से प्रभावित हुए।

1.1.9 मृत्यु :-

राघव जी बचपन से ही बीमार रहते थे। बचपन में वे टाइफाइड़, मलेरिया आदि से पीड़ित थे। युवावस्था में पेचिस और अनिद्रा के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। वे अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत एवं सतर्क नहीं थे। अनिद्रा को वे ईश्वर का दिया हुआ वरदान मानते थे। इस संबंध में उनका कथन है,

"अनिद्रा तो हम साहित्यकारों के लिए वरदान है, जितना जागेंगे, उतना ही लिखेंगे।"[2]

लेखन कार्य के लिए वे अथक परिश्रम करते थे। इस परिश्रम और अनिद्रा के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था। उन्हें अपने स्वास्थ्य के प्रति अविश्वास हो गया था।

शरीर में कमजोरी आने लगी थी। आयुर्वेदिक, युनानी, जड़ी-बूटी आदि तरह-तरह की औषधियों से भी कुछ भी लाभ नहीं हुआ। अंत में वे निराश हुए। जीवन के प्रति अजीब सी विरक्ति उत्पन्न हो गई; परंतु ऐसी अवस्था में भी राघव जी ने अपना लेखन कार्य नहीं छोड़ा। मृत्यु पूर्व भी उन्होंने मृत्यु पर ही कविता लिखी थी।

12 सितंबर, 1962 को बुधवार के दिन प्रातःकाल वे हमेशा के लिए सो गए उस क्षण का वर्णन करते हुए सुलोचना जी ने लिखा है,"धीरे-धीरे उनके मुख पर अनंत शांति का, अनंत विश्राम का भाव दिखने लगा - जो मानो कह रहा हो, यह यात्रा समाप्त हुई और अब महायात्रा का आरंभ....।"[3] राघव जी की मृत्यु पर श्री. अमरनाथ जी ने श्रद्धांजली अर्पित करते हुए लिखा है - "डॉ.रांगेय राघव असमय में ही साहित्य सेवा करते-करते स्वर्ग सिधारे। उनकी मृत्यु से साहित्यकाश का एक चमत्कृत नक्षत्र सदैव के लिए विलुप्त हो गया, जो अब कभी भी दृष्टिगत न होगा।"[4]

1.2 व्यक्तित्व :-

मनुष्य का व्यक्तितत्व उसके बाह्य पक्ष तथा आंतरिक पक्ष के रुप में दिखाई देता है, जो एक-दूसरे से पूरक हैं। मनुष्य के बाह्य पक्ष में मनुष्य का शरीर गठन, वेशभूषा, रहन-सहन, बोलचाल, व्यवहार आदि आते हैं। मुनष्य के व्यक्तितत्व के संबंध में श्री.राम वशिष्ठ जी ने लिखा है -

"मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में उसके जीवन की विभिन्न परिस्थितियाँ और उसके चारों ओर के वातावरण का महान योग होता है। पारिवारिक जीवन उसका मूलाधार है।"[5]

उपर्युक्त कथनानुसार राघव जी के व्यक्तित्व निर्माण में परिवार और आस-पास के समाज जीवन के वातावरण का योगदान रहा है। डॉ.रांगेय राघव जी आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्ववाले थे। उनका व्यक्तित्व शांति, सरलता, सभ्यता के साथ ही विद्वत्ता तथा प्रतिभा संपन्नता से परिपूर्ण दिखाई देता है। राघव जी के व्यक्तित्व के संबंध में सुलोचना जी ने लिखा है, "कितना भव्य व्यक्तित्व.... कितना असाधारण..... उनकी आँखों की चमक ही मुझे निराली लगी थी। उच्च ललाट, गौर वर्ण और लम्बा कद कहीं राम की प्रतिमूर्ति तो नहीं खड़ी कर दी?"[6]

1.2.1 <u>शरीर गठन</u> :-

राघव जी का शरीर सुंदर और आकर्षक था। ऊँचा कद, गोरा रंग, लंबी एवं नुकीली नाक, उच्च ललाट, तेजस्वी और विशाल नेत्र। उनका शरीर और चेहरा दोनों ही आकर्षक और सुंदर थे। मृत्यु तक उनके शरीर का सौंदर्य आकर्षक ही बना रहा केवल सिर के बाल गिरने लगे थे, जिनके प्रति वे सचेत थे। सन 1957 ई. की बीमारी के बाद उनका स्वास्थ्य गिरने लगा और मृत्यु तक गिरता ही गया।

1.2.2 <u>वेशभूषा</u> :-

राघव जी भारतीय वेशभूषा ही अपनाते रहे। वे अक्सर कुर्ता-पजामा पहनते थे तो कभी धोती-कुर्ता और सिर पर गांधी टोपी। सुलोचना जी ने उनकी वेशभूषा के बारे में लिखा है, "कपड़ों का उन्हें बेहद शौक था। और ढ़ेर सारे बनवाते भी थे। कभी ढ़ीली धोती बंगाली शैली में, जिसका एक छोर कुरते की जेब में, तो कभी ढ़ीला पजामा कुर्ता और जाकेट, और कभी चूड़ीदार पजामा और अचकन पहना करते थे। पहनने के पश्चात् वे एक कागज पर लिखते कि क्या-क्या पहना है

और फिर चेक कर लेते थे।"[7]

1.2.3 स्वभाव :-

राघव जी का स्वभाव मिलनसार, विनोदपूर्ण, हंसमुख तथा नटखट था। पारिवारिक तथा समाज के स्नेही-संबंधियों के साथ वे मजाक किया करत थे। मित्रों के बीच कभी-कभी, किसी-न-किसी को मजाक का शिकार बनाया करते थे। कभी-कभी दो दोस्तों को गलतफहमी में डालकर उन्हें लड़वाना, तो कभी दोनों में सुलह करवाना उनके स्वभाव का एक पहलू था। गांव के लोगों से लेकर अपने साहित्यकार दोस्तों तक सभी के साथ वे घुल-मिलकर रहते थे। परंतु लेखन कार्य के समय वे गंभीर एवं शांत रहा करते थे। लेखन कार्य के बीच किसी दूसरे आदमी द्वारा तंग करने पर उस आदमी पर वे गुस्सा होते थे। एक दिन एक मित्र ने उन्हें बार-बार त्रस्त किया तब संतप्त होकर उन्होंने उस मित्र को कमरे में दिन भर बंद कर दिया था।

राघव जी एक अच्छे व्यंग्यकार थे। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ अपने उपन्यास में व्यंग्य किया है। 'हुजूर' उपन्यास में एक कुत्ते के मुँह से अंग्रेजी हुकूमत पर व्यंग्य किया है। अंग्रेजों द्वारा भारतीयों का किया गया शोषण एक कुत्ता भी घृणित दृष्टि से देखता है और व्यंग्य करता है।

राघव जी उदार हृदयी तथा भावुक भी थे। आगरे के तांगेवाले, रिक्शेवाले से लेकर पनवाड़ी तक सब इन्हें न केवल जानते थे अपितु इनके लिए गर्व महसूस करते थे। वे तांगेवाले, रिक्शेवाले को मुंहमांगा पैसा देते थे। उनसे दोस्ती तथा बातें करना उन्हें बहुत पसंद आता था, फिर क्यों न वे उनसे झूठ बोलकर पैसे

हासिल करे। इसका एक उदाहरण है कि, एक बार एक तांगेवाले ने रोते हुए अपने लड़के की मृत्यु की झूठी कहानी सुनाई तो राघव जी ने तुरंत उस तांगेवाले को बीस रुपये दिए। तभी उनके मित्र ने तांगेवाले से मुर्ख बनाए गए राघव जी पर व्यंग्य किया परंतु राघव जी ने जवाब देते हुए कहा कि,

"मुर्ख क्या बना गया? मुझे तो Piece of Literature दे गया केवल बीस रुपये में जीवन के इतने बड़े सत्य का मिल जाना क्या महँगा है।"[8] घर के नौकरों के साथ भी उनका व्यवहार दोस्त जैसा था। इनकी जेब सदैव दूसरों के लिए खुली रहती थी। साहित्य-कृतियों में भी इनकी सहानुभूति गरिबों, दलितों एवं शोषितों के साथ रही है।

राघव जी स्वाभिमानी थे। सत्य कहने में वे हिचकिचाते नहीं थें जब राजस्थान सरकार की ओर से राघव जी को बीमारी के दिनों में उपचार के लिए कुछ रुपये मंजूर किए गए लेकिन जब राशि बहुत देर से आई तो उन्होंने उस राशि को लेने से साफ इन्कार कर दिया। एक बार उनके भाई ने भी रुपए भिजवाने में देर कर दी, तो राघव जी ने भाई के भेजे हुए पैसों को भी लेने से इन्कार कर दिया। इनके स्वभाव का प्रतिबिंब उनके उपन्यास के पात्रों पर भी पढ़ा दिखाई देता है।

स्वार्थ, द्वेष जैसे दुर्गुण उनमें नहीं थे। वे अपने लिए बाद में सोचते थे पहले दूसरों के लिए चिंतित रहते थे। दूसरों की मदद करना उनका स्वभाव गुण था।

राघव जी लेखन कार्य के लिए अथक परिश्रम करते थे। वे रात-दिन सिर्फ साहित्य के बारे में ही सोचते रहते थे। प्रातःकाल से शाम तक वे कमरे से बाहर नहीं आते थे। अनिद्रा को ईश्वर का दिया हुआ वरदान मानते थे। उन्होंने एक

पुस्तक लगातार इक्कीस दिनों में पूरी की थी। उन इक्कीस दिनों में सिर पर न तेल लगाया और न कंघा फेरा था, जैसे अपने आप को भूल से गए थे।

1.2.4 प्रकृतिप्रेमी :-

डॉ.रांगेय राघव प्रकृति प्रेमी थे। अपने जीवन में वे प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण को विशेष महत्त्व देते थे। आगरा, सिकंदराबाद तथा वैर के निकट नौलक्खा जैसे - रमणिय स्थान उन्हें अधिक प्रिय थे। घने वृक्षों के बीच तरह-तरह के पक्षियों का कलरव सुनना उन्हें भाता था। इनके उपन्यासों में प्राकृतिक चित्रण का वर्णन हुआ है। इनका काव्य भी प्रकृति चित्रण से भरा है, इन्होंने अपनी कविताओं में मोर, बरगद, जामुन को सुलोचना जी के देवर, जेठ और पड़ोसन की उपमाएँ देकर सुलोचना जी और प्रकृति के बीच रिश्ता स्थापित किया है। उनके बनाये गए चित्र अधिकतर प्रकृति और मानव-जीवन पर ही है। अपनी शारीरिक अस्वस्थता के समय भी वे माहिम (मुंबई) में शाम के समय समुंदर किनारे की ठंड़ी हवा से प्रेरित होकर कविता लिखा करते थे।

1.2.5 शौक :

रांगेय राघव जी को लिखते-पढ़ते तथा चित्रकारी करते समय चाय और सिगारेट अधिक प्रिय थी। रंगाचार्य जी के तीनों पुत्रों ने सिगरेट पीना बहुत ही कम उम्र में सीखा था। इस बारे में राघव जी ने बताया था कि "किच्चु को सिगरेट पीते देख मेरा भी मन कर गया। किच्चु ने हिम्मत बंधाई, बस् फिर क्या, मैंने सिगरेट पीना शुरु कर दिया।"[9]

बाग मुजफ्फर खां मोहल्ले में बाबू के रेस्तरां में दोस्तों के साथ घंटो

बैठ दुनिया भर की बातें करते थे। चाय और सिगरेट के साथ दोस्तों को मिलवाते-भिड़वाते और मजे लेते थे।

आगरा में लेखन काल के दौरान उन्हें फिल्में देखने का शौक था। ढ़ाई बजे तक लिखना बंद कर तीन से छः बजे के शो में राघव जी चले जाते थे। एक दिन राघव जी का मित्र भी उनके साथ फिल्म देखना चाहता था। किंतु राघव जी उसे टालने का प्रयास करते रहे क्योंकि फिल्म देखते समय वह बहुत बोलता था। अंत में राघव जी को उसे साथ ले जाना पड़ा। थिएटर में जाने के बाद राघव जी ने दोस्त के साथ शर्त लगाई कि, "यार हिम्मत हो तो तुम आवाज लगाओ 'तेल मालिश चम्पी, तो नकद पांच रुपए दूँगा।"[10] दोस्त ने जोश में आकर ऊँची आवाज में कह दिया तो चौकीदार ने दोस्त को थिएटर से बाहर निकाल दिया और राघव जी ने आराम के साथ फिल्म देखी।

उन्हें बैडमिंटन और शतरंज खेलने का शौक था। संध्या के समय कभी-कभी मंझले भाई और सुलोचना जी के साथ बैडमिंटन खेला करते थे। वे शंतरंज भी अच्छा खेलते थे ।

1.2.6 <u>कवि एवं पथदर्शक</u> :-

रांगेय राघव जी की साहित्य-यात्रा का प्रारंभ तो चित्रकला से होता है, लेकिन उन्होंने प्रथम चरण कविता के क्षेत्र में रखा और अंत भी कविता से ही हुआ। उन्होंने रूग्णावस्था में मृत्यु पूर्व कविता लिखी थी। उनकी कविताएँ ज्यादातर प्रकृति और मानव जीवन पर आधारित हैं। जब वे समुंदर के किनारे घूमने जाते तो विभोर होकर कविता लिखते थे। उनका साहित्यिक व्यक्तित्व मूलतः कवि का है, परंतु कुछ

कारणों से उन्होंने अन्य विधाओं में अपना लेखन कार्य किया। कवित्व के बारे में उन्होंने कहा था कि, "मैं मूलतः कवि हूँ, परिस्थिति ने मुझे उपन्यासकार, अनुवादक आदि सब कुछ बना दिया है।"[11] राघव जी ने काव्य लेखन में खंडकाव्य, प्रबंध काव्य तथा कविता संग्रह आदि लिखकर अपना असाधारण व्यक्तित्व दिखाया है। इन्होंने काव्य लेखन के विविध पहलुओं को कविता के माध्यम से दिखा दिया है।

हर साहित्यकार के साहित्य का कोई-न-कोई उद्देश्य होता है इसी प्रकार राघव जी के उपन्यास भी पथदर्शक का कार्य करते हैं जैसे - 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' के पात्र, परिस्थितियाँ, सामाजिक व्यवहार, संपत्ति तथा घर को लेकर उन्होंने 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' का 'सीधा-साधा रास्ता' बना दिया, ताकि उस पर चलनेवाले लोग भटक न जाए। राघव जी ने अपने उपन्यास संदेश तथा उद्देश्यपूर्ण दृष्टि से लिखे हैं। अपनी हर कृति द्वारा उन्होंने कोई-न-कोई संदेश अवश्य दिया है। उन्होंने किसी समस्या का हल प्रत्यक्ष रुप में प्रस्तुत नहीं किया है, अपितु उन्होंने उस समस्या की सत्यता की खोज कर उसे ऐसे प्रस्तुत किया है, जिसे पढ़कर पाठक के मन में सहानुभूति उत्पन्न हो जाए या ज्ञान प्राप्त हो जिससे जन-जागृति संभव है। राघव जी के संबंध में श्री. गोपीचंद गुप्त जी ने लिखा है, "यद्यपि आज डॉक्टर साहब का नश्वर शरीर भूतल से चला गया है, परंतु उनका साहित्य हमको कर्मपथ पर सतत चलने की प्रेरणा देता रहेगा। मेरा विश्वास है कि उनके साहित्य का आलोक हमारे प्रेम, त्याग बलिदान तथा कर्तव्य परायणता के सुंदर पथ पर चलने के लिए पथ-प्रदर्शिका का काम करेगा।"[12] राघव जी ने नव लेखकों तथा युवाओं को समाज की कुरीतियों, मानवतावाद विरोधी घटनाओं के प्रति विद्रोह साहित्य के माध्यम से करने के लिए प्रोत्साहन दिया था, प्रेरित किया था।

1.2.7 जीवन के प्रति अनुराग :-

राघव जी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक था। उन्होंने अपना जीवन साहित्य लेखन के लिए ही समर्पित किया था। राघव जी का जन्म ही साहित्यिक वातावरण के परिवार में हुआ था इसी कारण बचपन से ही साहित्यिक संस्कार उन पर होते गए और उन्होंने साहित्य को ही अपना जीवन मान लिया और इसीलिए अनिद्रा जैसे रोग को भी वे ईश्वर का दिया वरदान मानते रहे।

राघव जी के पिता को बड़े बेटे से अधिक स्नेह था, मंझले के लिए चिंता परंतु छोटे पुत्र राघव जी के प्रति वे निश्चिंत थे। पिता कहते कि वह अपना मार्ग स्वयं ही ढूँढ़ लेगा और राघव जी ने पिता की अभिलाषा पूरी की थी 'रांगेय राघव' बनकर। साहित्य-लेखन के लिए उन्होंने अपना नाम 'रांगेय राघव' रखा था। 'प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास' नामक पुस्तक लिखने के लिए उन्होंने इक्कीस दिनों तक स्वयं कों कमरे में बंद किया था। न सिर पर तेल, न कंघा फेरा था और उन्हें जब कंघा फिराने का होश आया तो बालों के गुच्छे-के-गुच्छे निकल आए। बालों को पूर्ववत देखने के लिए उन्होंने बहुत प्रयास किए, जो भी कोई इलाज बता देता वे करते थे। तरह-तरह के तेल लगाते, जड़ी-बुटियों का लेप लगाते, दवाइयाँ खाते परंतु सब व्यर्थ था। उन्हें बालों को गिरते देख बहुत दुख होता था।

राघव जी को अपने अल्प जीवन में अनेक संकटो से गुजरना पड़ा। उनके छोटे-मोटे पारिवारिक कलह, आर्थिक विषमता तथा सबसे महत्त्वपूर्ण उनकी शारीरिक बीमारियों ने उन्हें जीवन के प्रति निराश कर दिया, लेकिन सब को सहकर भी उन्होंने अंत तक अपनी इच्छा-आकांक्षाओं को पूरा करने की कोशिश की। कभी-कभी धन के अभाव में वे पुस्तकें बेच आते, जब सुलोचना जी चिंता करती

तब उनसे कहते थे, "तुम इस पचड़े में मत पड़ो। बस्, पढ़ लो, ताकि दोनों मिलकर काम करे। तुम जब तैयार हो जाओगी तब मैं अनुवाद और छोटे-मोटे काम करना छोड़ दूंगा। इसमें मेरा काफी समय नष्ट होता है। मुझे बहुत लिखना है। सारे संसार को हिला दूंगा।"[13]

राघव जी को कैंसर जैसी असाध्य बीमारी हो गई थी। डॉक्टरों ने उनके लिए सिर्फ छः महिने का काल दिया था, फिर भी उन्हें जीवन के प्रति अगाध विश्वास था। वे साहित्य-क्षेत्र में बहुत कुछ लिखना चाहते थे। अपने रोग पर उन्होंने सभी प्रकार के इलाज करवाए। औषधियों तथा उपचार का कुछ असर होते ही वे अपने साहित्य-लेखन के बारे में सोचने लगते, परंतु कुछ दिनों में फिर वहीं पीड़ा सहनी पड़ती, फिर इलाज शुरू हो जाते थे। राघव जी डॉक्टरों पर गुस्सा हो जाते थे। डॉक्टरों की असमर्थता पर निराश हो जाते लेकिन उन्हें अपने आत्मबल पर विश्वास था।

एक बार अस्पताल के कर्मचारी उन्हें स्ट्रेचर से ले जाना चाहते थे। स्ट्रेचर देखते ही संतप्त होकर कमजोर होते हुए भी वे पैदल चले गए। उस समय उन्होंने घबराई हुई सुलोचना जी का ढ़ाढ़स बँधाया था। वे डॉक्टर को कहते थे कि, "दस साल दे दो। कलम तोड़कर रख दूंगा।"[14] अपने जीवन के अंतिम क्षण मे भी वे साहित्य के बारे में सोचते थे। उन्होंने अपने जीवन में एक सपना संजोया था - एक विश्वविद्यालय निर्माण करने का। इस निर्माण की योजना को साकार करने के लिए उन्होंने स्थान भी चुन लिया था वैर का 'नौलक्खा' उनका प्रिय रमणिय स्थान। उस कल्पित विश्वविद्यायल का नाम उन्होंने 'तपोभूमि' रखा था, लेकिन यह सपना केवल कागज पर ही बनकर रह गया।

1.2.8 लेखन कार्य तथा साहित्य के प्रति रूचि :-

राघव जी ने लिखना बहुत ही छोटी उम्र से प्रारंभ किया था। शब्दकोश से पांच शब्द याद करना उनका एक नियम था। हर कृति लिखने के बाद वे मित्रों तथा माँ के साथ उस कृति पर चर्चा करते थे। माँ भी उनकी हर कृति को बड़े ध्यान से सुनती, उस पर सवाल करती और सुझाव भी देती थी। इसी तरह इनके घर तथा समाज के लोगों से इन्हें प्रेरणा मिलती गई।

राघव जी ने सन 1937 ई. में तेरह वर्ष की उम्र में ही लिखना आरंभ किया था। इन्होंने अपने साहित्य-लेखन की शुरूआत एक काव्य से की थी। कुछ दिनों बाद 'विशाल भारत' के मुखपृष्ठ पर छपनेवाली कविता ने उन्हें कवियों की पंक्ति में स्थापित कर दिया तो 'हंस' में छपे इनके रिपोर्ताज और कहानियों ने इन्हें गद्य लेख के रुप में प्रतिष्ठित किया। लेखन कार्य की रुचि के कारण महाविद्यालयीन शिक्षा में भी कठिनाइयाँ आती थी, परंतु उसकी तरफ ध्यान न देकर वे लेखन कार्य करते गए। उपन्यास, कहानियाँ, कविता के साथ अंग्रेजी कहानियों से प्रेरित होकर वे भूत-प्रेतों की कहानियाँ भी लिखते थे। ऐसी ही एक कहानी 'अंधेरे की भूख' लिखकर जब पूरी हुई, तो उन्हें इतना डर लगा कि उस रात वे अपनी माँ के पास जाकर सो गए।

राघव जी की दिनचर्या ही लेखन कार्य बन गई थी। सुलोचना जी उनके लेखन कार्य प्रकोष्ठ का वर्णन करते हुए लिखा है,

"उन्होंने मुझे प्रकोष्ठ देखने के लिए बुलाया जहां वे अपना लेखन कार्य किया करते थे। वहाँ पहुँच गई हूँ। चारों ओर पुस्तकें रखी थी और नीचे रखा था

आसन । कलम, दावात और कुछ कागज। हां, यही तो थी उस योगी की सम्पत्ति।"[15] राघव जी को जनवादी लेखक माना जाता था। उनके साहित्यिक प्रेरणा स्त्रोत उनके आसपास के बिखरे मानव-समाज के विविध जाति-धर्मो के लोक ही थे जो उनकी कृतियों में पात्रों के रुप में चित्रित हुए हैं। राघव जी विविध विषयों पर लिखते थे । अपने साहित्य के संबंध में उनका कथन हैं, "मेरे साहित्य की भले आज अधिक चर्चा न हो, मुझे उसकी परवाह नहीं है। मैंने तो आनेवाले युग के लिए लिखा है।"[16] वे जब उपन्यास लिखने से उब जाते, तब कहानियों की तरफ मुड़ जाते थे और कहानियों से उबे तो कविता या चित्रकारी की ओर मुड जाते थे । जब लेखन कार्य से थक जाते, तब पढ़ने में तन्मय हो जाते थे। वे गंभीर विषयों की पुस्तकें इतना मन लगाकर पढ़ते कि किस पृष्ठ पर क्या लिखा है? उन्हें याद रहता था। गंभीर विषयों की पुस्तक पढ़ने से जब थकावट महसूस होती तो वे हल्की-फूल्की कहानियाँ ओर उपन्यास पढ़ते थे। जब वे अस्वस्थ हो जाते तो 'चंद्रकांता' और 'चंद्रकांता संतति' पढ़ते थे। बिना पुस्तक वे शौच भी नहीं जाते थे। शौचालय में भी उनका छोटासा पुस्तकालय था। लिखने ओर पढ़ने से जब मन थक जाता, तब वे डायरी में 'क्या लिखना है?' की सूची तैयार करते। जीवन के अंतिम क्षणों में भी 'उत्तरायण' महाकाव्य पूरा करने की उनकी आकांक्षा को मृत्यु ने उनके जीवन की तरह अधूरा ही रखा।

1.2.9 <u>बुजुर्गो के प्रति आदर तथा अभिमान</u> :-

राघव जी को अपने पूर्वज तथा बुजुर्गों के प्रति आदर की भावना थी। उनके पूर्वज विद्वान तथा पंडित थे। अपने पूर्वजों के किस्से वे बड़े अभिमान तथा गर्व के साथ सुलोचना जी को सुनाते थे। अपने पूर्वजों की वंशावली पर उन्होंने

कविता भी रची है।

राघव जी को अपने माता-पिता पर गर्व था। अपने पिता की विद्वत्ता एवं शौर्य, उनकी साहसिक तथा रहस्यमयी जीवन के बारे में वे बड़े आदर तथा उत्साह से बताते थे। अपने माता-पिता के कई गुण उन्हें विरासत में मिले थे। राघव जी के पिता सीताराम मंदिर के पुजारी (स्वामी) थे और गांव के लोग उन्हें बड़े महाराज जी के नाम से बुलाते थे। स्वभाव से सरल, उदार और दयालु थे। वे निर्भय तथा गांववालों के सुख दुख में बराबर के भागीदार बने रहते थे ऐसे अनेक गुणों के कारण राघव जी के पिता आदरणीय व्यक्ति थे।

राघव जी की माता भी सीधी-सरल और दयालु थी। राघव जी अपनी माँ से बहुत प्यार करते थे। राघव जी का आदरणीय स्थान उनकी माता थी। अंतिम दिनों में वे अपनी माँ के पास ही रहे थे। माँ की मृत्यु के बाद वे बहुत दुखी हो गए थे। अकेले में कई बार माँ को याद कर रोते थे। उन्होंने 'राघवायण' शीर्षक से पद्यानुवाद कृति अपनी माँ को समर्पित की थी। उन्होंने 'मातृदाह' नामक कविता में अपनी माँ की यादों को प्रस्तुत किया है।

राघव जी की बुआ (अत्ते), विद्वान तथा सात्विक विचारक फूफा (देशिकाचार्य), मौसी 'अतंगा' और 'श्रीरंगा' आदि के प्रति उन्हें बहुत स्नेह था। राघव जी इन सबका आदर करते थे।

1.2.10 <u>कर्तव्य के प्रति जागृत तथा कर्तव्यनिष्ठ</u> :-

डॉ.रांगेय राघव जी का पालन-पोषण जिस प्रकार के साहित्यिक वातावरण में हुआ था, उस वातावरण को बनाए रखने के लिए लेखक के रुप में

राघव जी ने अथक परिश्रम किया। किंतु उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हुआ। उनके लेखन कार्य के पीछे उनकी प्रतिभा तथा विद्वत्ता तो थी ही इसके साथ उनकी आर्थिक विवशता भी थी। आर्थिक विषमता के कारण वे दिन-रात लिखते थे। राघव जी ने सुलोचना जी को बी.ए. की अंतिम परीक्षा देने के लिए मजबूर किया। उनका मत था कि सुलोचना जी भी पढ़कर नौकरी करे ताकि दोनों मिलकर परिवार को सँभाले। मंझले भाई के ऑपरेशन का सारा खर्चा राघव जी ने उठाया था। सुलोचना जी एम्.ए. करने के लिए बंबई नहीं जाना चाहती थी तब उन्हें समझाते हुए कहा था कि,"यह जरुरी नही कि पति-पत्नी हमेशा साथ रहे। जीवन में कार्य और कर्तव्य का स्थान बहुत ऊँचा है और यदि पति-पत्नी में परस्पर स्नेह और एक-दूसरे को समझने की क्षमता है, तो वे कही भी रहे वह वैसा ही बना रहता है। मैं चाहता हूँ कि तुम पढ़ लिखकर मेरा साथ दो। हम साथी हैं और हमें एक पथ पर चलना है।"[17] उन्हें अपनी पत्नी से बहुत सी उम्मीदें थी। वे अपनी पत्नी को सिर्फ गृहिणी रुप में नहीं देखना चाहते थे तो अन्य कार्यों में भी पारंगत बनाना चाहते थे। वे चाहते थे कि सुलोचना जी स्वावलंबी बने। इसीलिए उन्होंने अपने अंतिम दिनों में पत्नी से वचन लिया था कि, "मुझे वचन दो कि तुम अपने पैरों पर खड़ी रहोगी।.....Don't depend on others एम्.ए. करके नौकरी कर लेना।"[18] जब सुलोचना जी ने वचन दिया तब उन्हें शांति मिली।

राघव जी ने लेखक होने के नाते नये लेखक तथा गांव के युवाओं को प्रोत्साहन देने हेतु उन युवाओं का साथ लेकर समाजशास्त्र एवं मानसशास्त्र पर पुस्तकें लिखी और प्रकाशकों से अपनी पुस्तक प्रकाशित करने के बजाय उन नवलेखकों तथा युवाओं की पुस्तके प्रकाशित करवाते थे। उपन्यासकार का कर्तव्य होता है कि वह

अपनी साहित्य-कृति में समाज का यथार्थ वर्णन करे। राघव जी ने साहित्य कृति में समाज का यथार्थ चित्रण किया है। अपने अनुभव और सत्यता की खोज कर उपन्यास कहानी आदि कृतियों की रचना की हैं। वे शहर के गलियों-झोपडियों में जाकर मानव-जीवन को देख लेते थे। कभी सुलोचना जी को साथ ले जाकर कहते कि, मानव जीवन का यह रुप भी तो देख लो। ऐसा रुप जहाँ गरीबी है पर जीवन भी... ..। उनकी अधिकतर कृतियाँ यथार्थ पर आधारित हैं, जिसमें उन्होंने अपने अनुभव से उनका निर्माण किया है। इनकी कृति पढ़ते समय ऐसा लगता है कि यह सारी घटनाएँ हमारे सामने ही घट रही हैं।

1.2.11 क्रांतिकारी तथा देशप्रेमी :-

राघव जी को क्रांतिकारी तथा देशप्रेम के विचार अपने पिता से विरासत में मिले थे। उनके पिता स्वाधीनता के पक्षधर थे। राघव जी पर भी इन्हीं विचारों का गहरा असर हुआ। अपनी युवावस्था में वे क्रांतिकारियों की मदद करते थे। अपने घर में ही ब्रिटिश सरकार विरोधी 'पैम्लेटस्' तैयार कर बँटवाते थे। पुलिस को इस बात का संदेह होने पर राघव जी पर कड़ी नजर रखी जाती थी। उन्होंने 'बंदुक और बीन' में द्वितीय महायुद्ध का वर्णन किया है। उनके एक मित्र 'लाखनसिंह' के भाई युद्ध में लड़े थे और उन्हीं से सुनी अनेक घटनाओं का यथार्थ चित्रण 'बंदुक और बीन' में किया है।

सन 1946 ई. में वे 'निर्माण' नामक एक पत्रिका का संपादन करना चाहते थे। इसी पत्रिका द्वारा वे अपने ध्येयों और क्रांतिकारी विचारों का निर्माण करना चाहते थे। संपादकीय में एक स्थान पर उन्होंने लिखा है, "हमारा ध्येय है कि, पूँजीवादी कठोरता से दलित नए लेखक सिर उठाए और साहित्य की घृणित गुटबंदियों

के गढ़ो को तोड़ा जाए..... बीज से महावट बनकर जो आज किरणें रोक रहा है, जिसकी रुढ़ियाँ जटाओं के समान लौटकर पृथ्वी को ग्रस लेना चाहती है..... आज हमारा नया यौवन इस जर्जर पापलिप्त बुढ़ापे की जड़ो को खोद ड़ालना चाहता है।"[19]

राघव जी मार्क्सवादी जीवन में विश्वास रखनेवाले थे। इन्हें श्रमिकों तथा शोषितों से पूर्ण सहानुभूति थी और शोषक वर्ग से घृणा। वे समाज की आर्थिक विषमता को हटाने के लिए परिस्थितियों को बदलना चाहते थे। इन मार्क्सवादी विचारों को अपनी कृतियों के माध्यम से प्रस्तुत कर समाज को जागृत करने का प्रयास किया है। साथ ही वे नव लेखकों को प्रेरित करते थे ताकि साहित्य-कृतियों के माध्यम से पूँजीवादी तथा शोषक वर्ग पर प्रहार करके उनका विनाश कर सके।

1.2.12 हिंदी के प्रति विशेष अनुराग :-

राघव जी का परिवार अहिंदी भाषी था । इसीलिए परिवार के लोग संस्कृत, तमिल, कन्नड और ब्रजभाषा के विद्वान थे। उनके परिवार में कन्नड, तमिल और ब्रजभाषा बोली जाती थी। राघव जी की शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से हुई थी, फिर भी उन्हें हिंदी के प्रति अभिरुचि थी। उन्होंने हिंदी में स्नातकोत्तर परीक्षा, पदवी परीक्षा और पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की।

राघव जी ने संस्कृत के 'मेघदूत', 'ऋतुसंहार' आदि का हिंदी में सचित्र अनुवाद किया। 'मेघदूत' के अनुवाद की डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने काफी प्रशंसा की, परंतु उनका कहना था कि हिंदी के अलावा इसका अंग्रेजीं में अनुवाद क्यो नहीं किया? इस सवाल से राघव जी निराश हुए। उन्होंने बताया था कि, "उस समय मेरे मन में इतना अधिक रोष उत्पन्न हुआ कि, मैं दिखा देना चाहता था कि अंग्रेजी में

अनुवाद इसलिए नहीं किया कि अंग्रेजी नहीं आती, परंतु इसलिए कि – हिंदी के लिए अधिक प्रेम है।"[20]

राघव जी के पिता उनके चुने हुए इस साहित्य क्षेत्र से कुछ निराश ही थे क्योंकि उनके मत से इस क्षेत्र से गुजारा नहीं हो सकता। परंतु राघव जी ने अपने पिता को विश्वास दिलाया कि वे सफलतापूर्वक इस पथ पर चल सकते हैं। और उन्होंने साहित्य की हर विधा में लेखन कर अपनी पहचान बनाई रखी। उन्होंने अहिंदी भाषी होकर भी काव्य, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, आलोचना, रिपोर्ताज, फीचर, संस्मरण, रेडियों कथा, रेखाचित्र, साहसानुभव, विदेशी तथा संस्कृत साहित्य का हिंदी अनुवाद कर हिंदी साहित्य की समृद्धि में महान योगदान दिया है।

1.2.13 नारी के प्रति आदर :-

राघव जी नारी का आदर करते थे। इसका आरंभ उनके अपने परिवार से ही हुआ है। वे अपनी माँ को बहुत मानते थे। उनके लिए सबसे अधिक आदरणीय 'माँ' थी। वे प्रथम अपनी हर कृति माँ को सुनाकर उनका सुझाव लेते थे। माँ के प्रति उनका विशेष प्रेम था।

राघव जी की मौसी 'अतंगा' और 'श्रीरंगा', बुआ 'अत्ते' के प्रति विशेष स्नेह था, श्रद्धा थी। उन्होंने अपनी 'प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास' पुस्तक 'श्रीरंगा' मौसी के नाम समर्पित की है। राघव जी के पिता भी अत्ते (अक्काजी) से हर बात में सलाह-मशवरा कर, उनका सुझाव लेकर ही अपना काम करते थे। राघव जी ऐसी जीवन-संगिनी चाहते थे कि, उनके लेखन कार्य में प्रेरणा और प्रोत्साहन देती रहे। सुलोचना जी को पढ़ने-लिखने में रुचि थी। राघव जी अपनी हर कृति की चर्चा

सुलोचना जी के साथ करते थे। इससे यह पता चलता है कि पूरे परिवार में ही नारी के प्रति आदर, तथा समानता की भावना थी।

राघव जी ने अपनी साहित्य कृतियों में नारी के प्रति विशेष सहानुभूति प्रकट की है। उनकी अधिकतर कृतियाँ नारी-जीवन पर आधारित हैं। उन्होंने अपने सामाजिक, ऐतिहासिक, जीवनचरित्रात्मक उपन्यासों में नारी जीवन के विविध पहलुओं को चित्रित किया है। और प्राचीन काल से आधुनिक काल तक की पीड़ित तथा शोषित नारी स्थिति का चित्रण कर सामाजिक विषमता तथा कुरीतियों पर प्रहार किया है। उन्होंने एक ओर नारी की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए उसके यथार्थवादी रुप को चित्रित किया है तो दूसरी ओर उसके आदर्शवादी रुप को समाज के सामने प्रस्तुत किया है। इस तरह इनके उपन्यासों की नारियों में यथार्थ और आदर्श दोनों का समन्वय मिलता हैं।

1.3 <u>कृतित्व</u> :-

डॉ.रांगेय राघव जी अहिंदी भाषी होते हुए भी उन्होंने साहित्य क्षेत्र की हर विधा में लेखन कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। उनके लेखन कार्य के कारण उन्हें बहुमुखी-प्रतिभा संपन्न साहित्यकार माना जाता है। राघव जी को किसी एक विधा अथवा एक विषय लेखक के रुप में नहीं बांधा जा सकता। वे एक साथ कवि, कहानीकार, नाटककार, उपन्यासकार, निबंधकार, रिपोर्ताज लेखक, आलोचक, अनुवादक और साथ ही उदात्त विचारक के रुप में समाज के सामने प्रस्तुत हुए हैं। राघव जी ने चित्रकला क्षेत्र से आरंभ किया था। परंतु साहित्य का प्रारंभ उन्होंने कविता के क्षेत्र से किया और अंत भी इसी क्षेत्र से हुआ, उन्होंने रूग्णावस्था में मृत्यु पूर्व कविता लिखी थी।

राघव जी के साहित्य लेखन के लिए माता-पिता, बुआ, फूफा, दोस्तों के साथ चर्चा, गांव के अनपढ़ लोगों से सुनी कहानियाँ, किस्से आदि पारिवारिक और सामाजिक प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। साथ ही प्रकृति, ग्रामीण तथा महानगरीय जीवन, शांति निकेतन का वातावरण भी इनकी प्रेरक शक्ति रही हैं। उनतालीस वर्ष की आयु में उन्होंने मौलिक तथा अनूदित डेढ़ सौ पुस्तकों की रचना कर अपने असाधारण व्यक्तित्व तथा प्रतिभा का परिचय दिया हैं। जिसमें से कुछ प्रकाशित तो कुछ अप्रकाशित रही हैं

1.3.1 <u>काव्य</u> :-

रांगेय राघव जी ने अपने साहित्यिक-जीवन का आरंभ कविता लिखने से किया था। उन्होंने विविध विषयों को अपने काव्यों में स्थान दिया है। इसमें अपने पूर्वज, परिवार, प्रकृति-चित्रण, मानव-जीवन, इतिहास, महायुद्ध आदि से प्रेरित होकर काव्य निर्मिती की हैं।

राघव जी का 'अजेय खंडहर' नामक प्रथम खंडकाव्य है, जिसकी रचना उन्होंने सन 1944 ई. में की थी। सन 1946 ई. में 'पिघलते पत्थर' नामक कविता संग्रह की रचना की। सन 1947 ई. में उन्होंने 'मेधावी' प्रबंध काव्य की निर्मिती की, राघव जी का यही काव्य 'हिंदुस्थान अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित हुआ । सन 1948 ई. में राघव जी ने 'राह के दिपक' कविता संग्रह का निर्माण किया। 'पांचाली' खंडकाव्य की रचना सन 1955 ई. में की। 'रुपछाया' नामक प्रबंध काव्य की रचना उन्होंने सन 1956 ई. में की। इसके साथ ही 'कामधेनु', 'किरणें बुहार लो', 'बंधनमुक्ता', 'शामला', 'मृत्युंजय-ज्वाला', 'आर्या', 'पंचशिखा' आदि कविता संग्रह अप्रकाशित रहे हैं। उनके 'महाविजय', 'उत्तरायण' महाकाव्य तथा 'राघवायण'

(वाल्मिकी रामायण का अनुवाद) और 'मांडवी' अपूर्ण रहे हैं।

1.3.2 कहानी संग्रह :-

राघव जी ने काव्य विधा के साथ कहानी विधा में भी कहानीकार के नाम से प्रतिष्ठा प्राप्त की है। कुछ आलोचकों का मत हैं कि इन्होंने दो सौं कहानियाँ लिखी हैं।

राघव जी के ग्यारह कहानी संग्रह हैं । सन 1947 ई.में प्रथम कहानी संग्रह 'साम्राज्य का वैभव' तथा 'देवदासी' आरै 'समुद्र के फेन' प्रकाशित हुए। सन 1947 इ.में 'अधूरी मूरत' और 'जीवन के दाने', सन 1951 ई.में 'अंगारे न बुझे', सन 1953 ई.में 'ऐयाश मुर्दे', सन 1957 ई.में 'इन्सान पैदा हुआ', और 'पांच गधे', सन 1961 ई.में राजस्थान अकादमी द्वारा पुरस्कारित 'मेरी प्रिय कहानियाँ' तथा सन 1963 ई.में अंतीम 'एक छोड़ एक' आदि कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं ।

1.3.3 नाटक :-

कहानी और काव्य विधा की अपेक्षा राघव जी की नाटक विधा में अधिक रुचि दिखाई नहीं देती। उन्होंने तीन नाटकों की रचना की हैं। 'स्वर्गभूमि का यात्री' नाटक की रचना सन 1951 ई.में की। दूसरा नाटक 'रामानुज' की रचना सन 1952 में हुई है। 'विरुढ़क' में गौतम बुद्ध कालीन परिवेश का चित्रण किया है, यह नाटक उन्होंने सन 1955 में लिखा था।

1.3.4 उपन्यास :-

रांगेय राघव जी उपन्यासकार के रुप में पहचाने जाते हैं। राघव जी का

नाम समर्थ उपन्यासकारों में महत्त्वपूर्ण माना जाता है। राघव जी ने कुल-मिलाकर 39 उपन्यासों की रचना की हैं। उपन्यासों के वर्गीकरण के अनुसार 'चौदह' सामाजिक, 'तीन' आंचलिक उपन्यास, 'तीन' समाजवादी उपन्यास, 'आठ' ऐतिहासिक उपन्यास और 'नौ' जीवन चरितात्मक उपन्यास और 'दो' पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित उपन्यासों की रचना की हैं।

(अ) <u>सामाजिक उपन्यास</u> :-

सामाजिक उपन्यासों में तत्कालीन समाज का मानवी जीवन, रुढ़ि-परंपरा, विकास तथा -हास, संस्कृति तथा कुरीतियों का यथार्थ चित्रण किया जाता है । राघव जी ने अठारह वर्ष की आयु में अपना प्रथम उपन्यास 'घरौंदा' सन 1940 ई.में लिखा। सन 1954 ई.में 'उबाल', सन 1957 ई.में 'बौने और घायल फूल', सन 1958 ई.में 'बंदूक और बीन', तथा 'राई और पर्वत' प्रकाशित हुए । 'छोटीसी बात' सन 1959 ई.में, 'पापी' सन 1960 ई. की रचना हैं । 'दायरे', 'आग की प्यास', 'कल्पना' सन 1961 ई. की रचनाएँ हैं । सन 1962 ई.में 'पतझर', 'पराया', 'प्रोफेसर', 'आखिरी आवाज' कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं ।

(ब) <u>आंचलिक उपन्यास</u> :-

आंचलिक उपन्यासों में विभिन्न अंचलों या क्षेत्रों के जनजीवन को चित्रित किया जाता है। राघव जी ने 'तीन' आंचलिक उपन्यास लिखे।

'काका' सन 1953 ई.,'कब तक पुकारूँ' सन 1957 ई. तो 'धरती मेरा घर' सन 1961 ई. की निर्मिती है ।

(क) <u>समाजवादी उपन्यास</u> :-

समाजवादी उपन्यासों में समाज में प्रचलित पूँजीवादी व्यवस्था, वर्ग-संघर्ष, सामाजिक, राजनैतिक आदि परिस्थितियों का वर्णन किया जाता है।

'विषाद मठ' सन 1946 ई.में, सन 1951 ई.में 'सीधा-साधा रास्ता', तो 'हुज़ूर' सन 1952 ई. में प्रकाशित हुए ।

(ड) <u>ऐतिहासिक उपन्यास</u> :-

इन उपन्यासों में ऐतिहासिक तथ्यों को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। 'मुर्दों का टीला' सन 1948 ई. में, 'चीवर' सन 1951 ई.में तो 'अन्धेरे के जुगनु' सन 1953 ई.में प्रकाशित हुए। 'राह न रुकी', 'जब आवेगी काली घटा' और 'पक्षी और आकाश' सन 1958 ई. की रचनाएँ हैं । महायात्रा में 'अन्धेरा रास्ता' और रैन और चन्दा सन 1960 ई. की रचनाएँ हैं ।

(इ) <u>जीवन चरितात्मक उपन्यास</u> :-

इन उपन्यासों में इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति, साहित्यकारों तथा समाजसेवियों के व्यक्तितत्व तथा जीवन चरित्र को चित्रित किया जाता है।

'देवकी का बेटा', 'यशोधरा जीत गई', 'लोई का ताना','रत्ना की बात', 'भारती का सपूत' सन 1954 ई. की रचनाएँ हैं । सन 1957 ई. में 'लखिमा की आँखें', सन 1959 ई. में 'धूनी का धुआँ' प्रकाशित हुई। तो 'मेरी भवबाधा हरो' और 'आँधी की नीवें' सन 1961 ई. की रचनाएँ हैं ।

(ई) <u>पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित उपन्यास</u> :-

राघव जी के विदेशी साहित्य पर आधारित दो उपन्यास हैं । 'बोलते खण्डहर' और 'अन्धेरे की भूख'।

1.3.5 <u>रिपोर्ताज</u> :-

उन्होंने 'तूफानों के बीच' नामक बंगाल के अकाल पर रिपोर्ताज लिखा है।

1.3.6 <u>आलोचना, इतिहास-संस्कृति-चिंतन</u> :-

राघव जी आलोचक के रुप में भी उभरकर आए हैं । उन्होंने कुल-मिलाकर सोलह आलोचना ग्रंथों की रचना की है ।

'भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका' सन 1946 ई. की रचना है। 'भारतीय संत परंपरा और समाज' की निर्मिती सन 1949 ई. में हुई । सन 1953 ई. में उन्होंने 'संगम और संघर्ष', 'प्राचीन भारतीय संत परंपरा और इतिहास' की रचना की। 'हिंदी साहित्य की धार्मिक और सामाजिक पूर्वपीठिका', 'प्रगतिशील साहित्य के मापदंड' की रचना सन 1954 ई. में की थी। 'समीक्षा और आदर्श', 'काव्य यथार्थ और प्रगति सन 1955 ई. में तो सन 1958 ई. में 'महाकाव्य का विवेचन' और 'गोरखनाथ और उनका युग' प्रकाशित हुए। साथ ही 'काव्य के मूल विवेच्य', 'काव्य विजय', 'तुलसीदास का कथा शिल्प' आदि उनके आलोचना ग्रंथ हैं । 'मध्यकालीन मुस्लिम इतिहास' नामक आलोचना ग्रंथ अपूर्ण रहा है ।

1.3.7 अनुवाद :-

राघव जी ने साहित्य की अन्य विधाओं की तरह 'अनुवाद' विधा में भी अपनी असाधारण पहचान समाज के सामने रखी है। उन्होंने अंग्रेजी तथा संस्कृत ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया है। उन्होंने चवालीस ग्रंथों को हिदी में अनूदित किया है।

राघव जी का प्रथम अनूदित ग्रंथ संस्कृत का 'मृच्छकटिक' है, इसके साथ ही 'मुद्राराक्षस', 'दशकुमार चरित', 'मन के बंधन', 'रुप की ज्वाला', 'तूफान','तिल का ताड', 'एक सपना', 'ऑथेलो', 'हैमलेट', 'बारहवीं रात', 'सम्राट लियर', 'वेनिस का सौदागर', 'मैकबेथ', 'रोमियो-ज्युलियट', 'जैसा तुम चाहो', 'ज्यूलियस-सीजर' आदि संस्कृत और अंग्रेजी ग्रंथों का अनुवाद सन 1957 ई. में किया हैं। सन 1958 ई.में 'निष्फल प्रेम', 'परिवर्तन', 'भूलभूलैया', यह अनुवाद लिखें। 'शिल्पी का प्रेम' सन 1959 ई. का अनुवाद है। तो 'एण्टीगोने', 'ईडीपीस : पाप, प्रेम और मृत्यु', 'संसार के महान उपन्यास' सन 1961 ई. की अनुवाद कृतियाँ हैं, तथा 'पूर्णकलश' और 'होरेस की काव्यकला' भी सन 1961 ई. की रचनाएँ हैं। 'मेघदूत - (हिन्दी)' भी सन 1961 ई. की कृति है। सन 1962 ई. में 'रॉकेट की कहानी' तो संस्कृत मेघदूत का अंग्रेजी में अनुवाद 'मेघदूत' सन 1976 ई. में लिखा गया। 'ऋतुसंहार' (अंग्रेजी और हिन्दी) इनका सन 1977 ई. का अनुवाद ग्रंथ है। इसके साथ ही 'आइ वन हो ('आइ वन हो' वॉल्टर स्कॉट), 'कुमारसंभव', 'गीतगोविंद (गीतगोविंद - जयदेव), 'भामिनी विलास' (भामिनी विलास - पंडित राज जगन्नाथ), 'महाकवि गेटे का काव्यालोक', 'महाकवि टेनीसन का काव्यालोक', 'महाकवि शेक्सपियर का काव्यलोक', 'महाकवि मायकोवस्की का काव्यालोक', 'महाकवि चौसर का

काव्यालोक','महाकवि होमर का काव्यालोक', 'महाकवि यूरिपिडीज का काव्यालोक', 'राबर्ट लुई स्टीवेन्सन का काव्यालोक', 'चीनी कवि लाओत्सु का काव्यालोक' आदि अनुवाद अप्रकाशित ही रहे हैं। इन कृतियों से राघव जी का गहरा अध्ययन तथा मनन-चिंतन का परिचय हो जाता है।

1.3.8 समाजशास्त्र लेखन :-

राघव जी नो नव-लेखकों तथा युवा वर्ग को प्रोत्साहित करने के लिए उनके साथ मिलकर सहयोगी लेखक के रुप में समाजशास्त्र लेखन किया है। इसमें 'संस्कृति और समाजशास्त्र (दो भाग)', 'अपराध शास्त्र', 'सामाजिक समस्याएँ और विघटन', 'सामाजिक समस्याएँ और रीति रिवाज', 'संस्कृति और मानवशास्त्र' आदि ग्रंथों का लेखन सन 1961 ई. में किया ।

1.3.9 एकांकी संग्रह :-

साहित्य क्षेत्र के 'एकांकी' विधा की ओर राघव जी की अधिक रुचि नहीं दिखाई देती। उन्होंने दो ही 'एकांकी संग्रहों का निर्माण किया हैं। (अ)'इंद्रधनुष्य' और (आ)'कटाव की रेत'। कटाव की रेत अपूर्ण रहा है।

1.3.10 चलचित्र :-

राघव जी ने सन 1953 ई. में 'लंकादहन' नामक फिल्म के लिए कहानीमय संवाद लिखे। उनके एक मित्र ने राघव जी का परिचय एक फिल्म प्रोड्यूसर से करवा दिया था। और वहीं फिल्मी जगत उन्हें बम्बई में खींच ले आई, परंतु इस क्षेत्र में वे अपनी तरक्की न कर सकें, क्योंकि 'लंकादहन' के निर्माता ने उनसे काम तो करवा लिया परंतु बिना कुछ दिए वह गायब हो गया। इस घटना से

इस क्षेत्र के बारे में उनके मन में वितृष्णा सी जाग उठी, और उन्होंने संबंध तोड़ दिया।

<u>**निष्कर्ष**</u> :-

डॉ.रांगेय राघव प्रेमचंदोत्तर युग के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य की हर विधा में अपनी एक अलग पहचान ओर प्रतिष्ठा स्थापित की है। उनतालीस वर्ष की आयु में अहिंदी भाषी होते हुए उन्होंने बहुमुखी हिंदी साहित्य लिखा है।ऐसे प्रतिभा संपन्न साहित्यकार का जन्म 'आगरा' में रंगाचार्य परिवार में हुआ था। उनका पारिवारिक नाम 'वीर राघव' था परंतु परिवार और दोस्तों के बीच 'पप्पू' नाम से बुलाए जाते थे। उन्होंने साहित्य क्षेत्र के लिए 'रांगेय राघव' नाम रखा था। माता-पिता की विद्‌वता और स्वभाव गुणों की गहरी छाप राघव जी पर पड़ी थी। राघव जी ने 13 वर्ष की आयु में ही साहित्य क्षेत्र में पदार्पण किया था। और लेखन-पठन की अभिरुचि के कारण वे श्रमसाध्य लेखन करते थे। जैसे साहित्य लेखन के लिए उन्होंने अपना जीवन सौंप ही दिया था। इसी कारण 33 वर्ष तक वे अविवाहित थे। किंतु माँ की इच्छा और अपनी शारीरिक अस्वस्थता के कारण उन्होंने सुलोचना जी से विवाह किया।

राघव जी का व्यक्तित्व सुंदर और आकर्षक था। प्रभावित शरीर गठन के अनुसार उनकी वेशभूषा सीधी-साधी थी। वे कुर्ता-पजामा तो कभी सिर पर गांधी टोपी पहनते थे। उनका स्वभाव भी अलग ही था। वे कभी हँसते-मजाक करते तो कभी शांत एवं गंभीर बने रहते। लोगों के साथ घुल-मिलकर रहना उन्हें पसंद था। वे सहृदयी, भावुक और स्वाभिमानी थे। स्वार्थ एवं द्‌वेष जैसे दुर्गुणों से वे कोसों दूर थे। अपने जीवन में प्रकृति के बीच रहना उन्हें बहुत पंसद था। आगरा, सिकंदराबाद,

नौलक्खा जैसे रमणिय स्थान उन्हें प्रिय लगते थे। घने वृक्षों के बीच पंछियों का कलरव सुनना, समुंदर किनारे टहलना उन्हें भाता था। वे अपने प्रकृति प्रेम को चित्रकारी शौक के माध्यम से प्रस्तुत करते थे । चित्रकारी करते-करते चाय और सिगरेट पीना, फिल्में देखना, बैडमिंटन और शतरंज खेलने का उन्हें शौक था। इस शौक के साथ वे कविता भी करते थे। कविता से ही उनके साहित्य-सृजन का प्रारंभ हुआ। वे एक कुशल कवि के साथ-साथ पथदर्शक का भी कार्य करते रहे। गांव के युवा तथा नव-लेखकों को प्रेरित कर समाज में स्थित शोषक वर्ग और पूँजीपतियों का विनाश करना चाहते थे। साथ ही अपनी साहित्य कृतियों के माध्यम से आज भी समाज को विकास का मार्ग दिखाते हैं।

राघव जी अपने अस्वस्थ जीवन में भी व्यस्त रहते थे। दिन-रात लगातार साहित्य के संबंध में सोचते रहते। 'माँ' उनका आदरणीय स्थान था। पिता की विद्वत्ता, उदारता और निर्भिकता से वे प्रभावित थे। बुआ, फूफा और मौसी का वे आदर करते थे।

सुलोचना जी की स्वावलंबता का श्रेय राघव जी को देना पड़ेगा क्योंकि विवाह के पश्चात् उन्होंने अपनी पत्नी की पढ़ाई पूरी की और पत्नी की इच्छा विरुध्द उसे अपने पैरों पर खड़े होने तक की शिक्षा दी। वे अंग्रेजी शासन का भी विरोध करते थे। क्रांतिकारियों को मदद करना, ब्रिटिश शासन विरूध्द कार्य करना जिससे देशप्रेमी प्रवृत्ति का परिचय हो जाता है। देश प्रेम के साथ-साथ वे नारी का भी आदर करते थे। नारी के प्रति आदर की भावना उनके परिवार से ही प्रारंभ होती दिखाई देती है। लेखन कार्य करते समय वे अपनी माँ का एवं पत्नी का सुझाव लेते थे। उनकी अधिकतर कृतियाँ नारी-जीवन पर ही आधारित हैं। समाज में स्थित

नारी-जीवन की पीड़ा, दयनीयता एवं दुर्बलता के साथ नारी की वास्तविक स्थिति का चित्रण कर समाज को सचेत करने का प्रयास किया है। और नारी को स्वावलंबी बनने की ओर निर्देश किया है।

इसी तरह साहित्य क्षेत्र की हर विधा में लेखन कर उन्होंने अपने गहन अध्ययन, मनन और चिंतन का परिचय दिया है। काव्य में उन्होंने 13 काव्य संग्रहों की निर्मिती की हैं। ग्यारह कहानी-संग्रह भी समाज की वास्तविक स्थिति को ही प्रस्तुत करते है। व्यक्ति के व्यक्तिगत, सामाजिक, धार्मिक जीवन के साथ मनुष्य जीवन का चित्रण किया है। नाटक विधा की ओर उनकी विशेष रुचि नहीं दिखाई देती। सिर्फ उन्होंने तीन नाटकों में ऐतिहासिकता को ही प्रस्तुत किया है।

उपन्यास विधा में उन्होंने विशेष स्थान प्रस्थापित किया है। सामाजिक, आंचलिक, समाजवादी, ऐतिहासिक, जीवनचरितात्मक और पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित जैसे विविध प्रकार के उपन्यासों की रचना की है। उन्होंने कुल-मिलाकर उनतालीस उपन्यासों का निर्माण किया है। इसी तरह उन्होंने अपना गहरा अध्ययन, सूक्ष्म निरीक्षण, चिंतन और अनुभव के आधार पर सोलह आलोचना, इतिहास-संस्कृति-चिंतन ग्रंथों का निर्माण किया हैं।

संस्कृत और अंग्रेजी ग्रंथों का अनुवाद कर उन्होंने हिंदी साहित्य को विस्तृत करने का प्रयास कर संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य से समाज को परिचित कराया है। नव लेखकों और युवा वर्ग को प्रेरित करने के लिए उनके साथ समाजशास्त्रीय लेखन किया है। ताकि समाज शोषक और पूँजीपती वर्ग के भीषण रुप के प्रति सचेत होकर उनका विनाश कर सके। एकांकी विधा में भी उन्हें रुचि दिखाई नहीं देती। उन्होंने दो ही एकांकी संग्रह का निर्माण किया था। राघव जी ने साहित्य

क्षेत्र से संबंधित चलचित्र क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया था।'लंकादहन' नामक सिनेमा के लिए उन्होंने संवाद लिखे थे। परंतु आर्थिक विपन्नता के कारण वे इस क्षेत्र से मुड़ गए।

राघव जी ने नौकरी न कर स्वतंत्र लेखन किया।। साहित्य लेखन के लिए अथक परिश्रम करने के कारण वे अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत नहीं थे। फिर भी लेखन कार्य के साथ-साथ चित्रकारी, देशभक्ति, संगीत, पुरातन शिलालेखों की खोज, इतिहास चिंतन आदि अभिरुचियों की पूर्ति करते हुए सुख-दुख के साथ पत्नी सुलोचना, पुत्री सीमंतिनी के साथ अपना जीवन बिताया। साहित्यिक प्रेरणा स्त्रोत अपना साहित्यिक परिवार, प्रकृति चित्रण, समाज जीवन आदि ही रहे हैं। राघव जी के साहित्य लेखन से प्रभावित होकर उनकी कई कृतियों को 'हिंदुस्थान अकादमी', 'डालमिया' जैसे नामांकित पुरस्कार मिले हैं। किंतु उनतालीस वर्ष की आयु में ही उन्हें हमेशा के लिए अपनी साहित्य-यात्रा को रोकना पड़ा। 12 सितंबर, 1962 को कैंसर जैसी असाध्य बीमारी के कारण उनकी जीवन-यात्रा समाप्त हो गई। भारत सरकार ने मरणोपरांत उन्हें 'महात्मा गांधी' पुरस्कार से सम्मानित किया।

: संदर्भ सूची :

(1) सुलोचना रांगेय राघव - रांगेय राघव - एक अंतरंग परिचय, पृ.12

(2) सम्पा. अमरनाथ - डॉ.रांगेय राघव - साहित्यकार एवं व्यक्ति, पृ.66

(3) सुलोचना रांगेय राघव - रांगेय राघव - एक अंतरंग परिचय पृ.65

(4) सम्पा.अमरनाथ - डॉ.रांगेय राघव - साहित्यकार एवं व्यक्ति, पृ.20

(5) वही, पृ.67

(6) सुलोचना रांगेय राघव - रांगेय राघव - एक अंतरंग परिचय, पृ.43

(7) वही, पृ.26

(8) सम्पा. अमरनाथ - डॉ.रांगेय राघव-साहित्यकार एवं व्यक्ति, पृ.43

(9) सुलोचना रांगेय राघव - रांगेय राघव - एक अंतरंग परिचय, पृ.102

(10) वही, पृ.128,129

(11) सम्पा.अमरनाथ - डॉ.रांगेय राघव -साहित्यकार एवं व्यक्ति, पृ.43

(12) वही, पृ.66

(13) सुलोचना रांगेय राघव - रांगेय राघव - एक अंतरंग परिचय, पृ.45

(14) वही, पृ.64

(15) वही, पृ.7

13654

(16) सुलोचना रांगेय राघव - रांगेय राघव - एक अंतरंग परिचय, पृ.43

(17) वही, पृ.30

(18) वही, पृ.63

(19) वही, पृ.16

(20) वही, पृ.19

****